संगीत सम्राट

मास्टर ज्योती स्वरूप जी

का

जीवन चरित्र तथा विशेषताएं

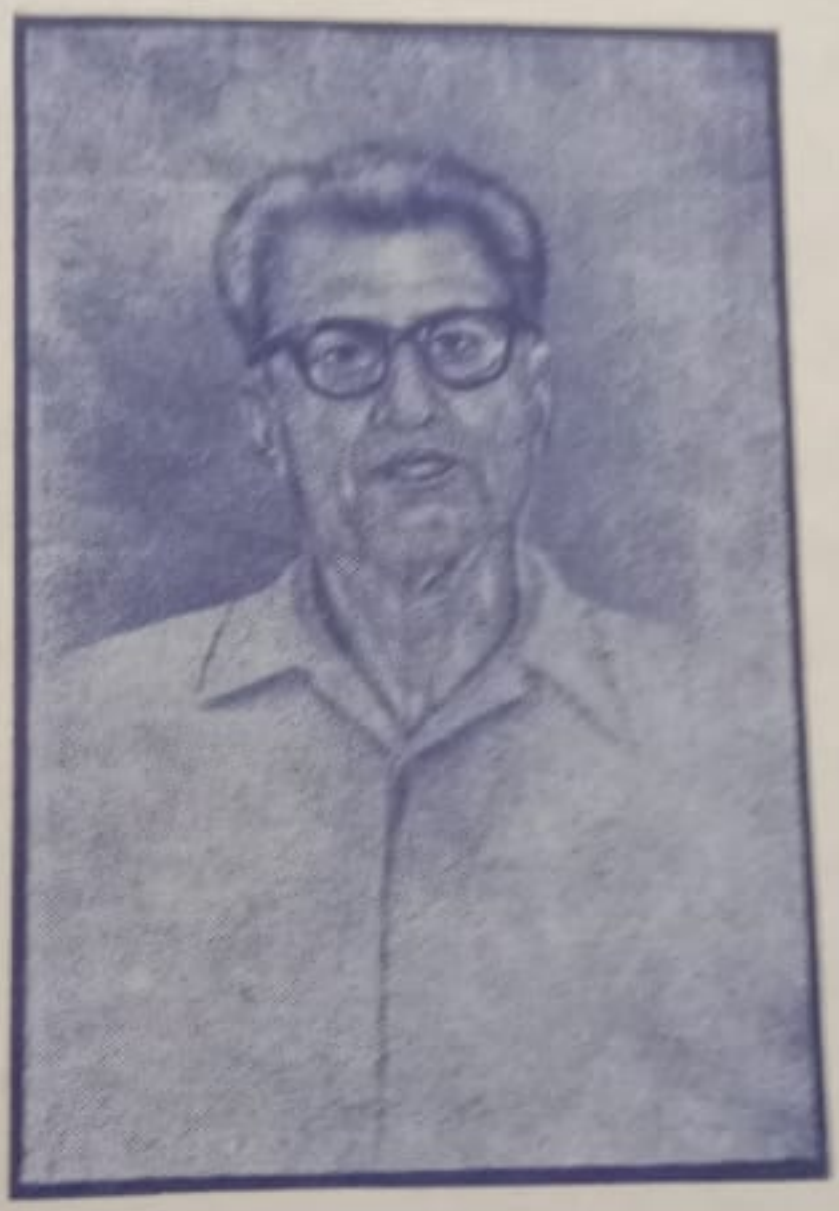

लेखक

कृष्ण चन्द्र भारद्वाज

विद्या मन्दिर, बठिंडा ।

श्रद्धांजली

तेरी मधुर स्मृती रह २ कर जब, हम को स्मरण हो जाती है।
जितना भी भुलाना फिर चाहे, विस्मरण नहीं हो पाती है।
था साथ तुम्हारा बरसों का, फिर उसको अब क्यो छोड़ दिया।
जो बंधन बांधा था हमसे फिर उसको अब क्यो तोड दिया।
अस्मरणय स्मृती तेरी, निसदिन हम को,तडपाती है। तेरी मधुर...
लिये गीतों के हम दीपक, खड़े सुने अन्धेरे मे।
मधुर स्वर इनमे भर कर के बदल दो तुम सवेरे में।
प्रत्येक यहाँ के कलाकार को तेरी याद तड़पाती है। तेरी मधुर -
है हम सब की यह कामना, सम्पूर्ण हो आराधना
इक बार यहां फिर से आकर, पूरी कर दो स्वर साधना।
रंग मंच के हर इक अभिन्य में, तेरी ही झलक आ जाती है। तेरी
इस लोक सा ही उस लोक में भी, गूजे जिस दिन सगीत वहाँ।
जैसे थे मिले मनमीत यहाँ, वैसा ही मिले मनमीत वहाँ।
तस्वीर तेरी सब के दिल में, साकार उभर जब आती है तेरी

लेखक : रबीन्द्र शर्मा–ब्रज मोहन शाँन

जीवन परीचय

संगीत सम्राट म० ज्योति सबरूप जी का जन्म सन १९०७ और स्वंग सिहम सन १९८१ ई० में बटिंडा नगर में हुआ। इनकी शिक्षा स्थानिय सरकारी स्कूल में हुई। इनकी शिक्षा का माध्यम उरदु भाषा थी अग्रेजी और हिन्दी का भी इन्हे पर्याप्त ज्ञान था इनका रंग गंदमी, नैन नक्श तीखे, कद सधारण और शरीर गठा हुआ था। यह अच्छे खिलाड़ी, महान कलाकार, उच्च कोटी के सगीतज्ञ, सफाई पसंन्द, भम्रणशील स्वाभव, कुशाग्रबृद्धि. द्रढ प्रतिज्ञ प्रतिभास्मपन्न और मित०ययी थे। सक्षेंय में यह कहा जा सकता है कि इनका व्यक्ति गत महान था। इनका बचपन, यौवन और बुढापा कला और सगीत की सेवा में व्यतीत हुआ। जीवन की अधिकाश रातें घर पर नहीं बल्कि रंगमंच पर ही बीती है। इन्के सर्वगवास से ऐसा आभस होने लगा है मानो बठिंडा की धरती से एक कलामर्मज्ञ चला गया। बठिंडा रंगमंच का सूर्य अस्त हो गया और इस धरती पर ऐसा गहन अन्धकार छा गया जिसमें बठिंडा रगमंच की आत्मा कई वर्षो तक भटकती रहेगी। परन्तु फिर भी उसे सम्भवत उसका लक्ष्य न मिले सगीत कला का जहाज ही महाँ से चला गया। धन्य २ है वह कुल जिसमें ऐसा लाल उत्पन हुआ, कृत्य २ है वह धरती यहाँ ऐसे कला मर्मज्ञ ने आपने दिन बिताये किसी शायर की यह पक्तियाँ ऐसे महान कलाकार पर ठीक ही बैठती है।

हजारों साल नरगिस आपनी वे नूरी पे रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदा वर पैदा।

जोवन सम्बन्धी कुछ रूचीयां

१) बालीबाल : मास्टर जी बचपन से ही बालीबाल के अच्छे खिलाड़ी रह चुके है। यह राष्ट्रीय बालीबाल की टीम के सदस्य थे और एक बार महाराजा भुपिन्द्र सिह द्वारा प्रोषित भारतीय टीम के सदस्य बन कर रूस में भी खेलने के लिये चुने गये। बठिंडा में जब भी बालीबाल की प्रतीयोगिता होती यह उसके निर्णायक अवश्य बनते। इनकी तेज आंखे बाल की गती के साथ २ चलती थी और तुरन्त निरपक्ष निर्णाय दे देते थे। जन्ता इनके खेल तथा निर्णाय की मुक्त कन्ठ से प्रशंसा करती थी। बालीबाल के अतीरिक्त अन्य खेलों में भी इनकी रूची थी।

२) भ्रमण : गर्मी हो या सर्दी, बरसात हो या बसन्त रितु वह प्रातकाल व सांयकाल अवश्य घूमने जाते थे। यही कारण था कि इनका स्वस्थय सदा अच्छा रहा।

३) संगीत : सगीत इनकी तीसरी रूची थी। जिस में यह सदा अद्वित्य एव अनुपम बने रहे। इसी कला के द्वारा यह कलाकारों के तो हृदय सम्राट थे ही बल्कि दूर २ तक आपने नाम का यशपताका चमकाये रहे और खुब नाम पाया। जब वह बाजा या पेटी बजाते और इनकी उगलीयां उस पर झुलतो तो वह दृश्य देखने योग्य होता था। झुलती उंगलीयों को देखकर कई फिलमी नायिकायें भी इनके ऊपर मंत्र मुग्ध हो गई थी और आपने साथ काम करने के लिये कई फिल्म कम्पनीयों से भी प्रार्थना पत्र भिजवाये परन्तु इन्होने फिल्म नगरी बम्बई में जाने की ऊपेक्षा बठिंडा में ही रह कर बठिंडा रंगमंच की सेवा करने को अधिक अधिमान दिया। इनका कला प्रेम तथा संगीत में रूची इस बात से भी सिद्ध होती कि

मृत्यु के कराल हाथों में जकड़े जाने से पूर्व जब यह जीवन व मृत्यु के मध्य जुझ रहे थे तब भी इनकी उगलीयाँ ऐसे झुल रही थी मानों किसी नाटक में संगीत दे रही हों। बठिंडा में जब भी कभी कोई संगीत गोषटी हुई तो उन्होने उसकी शोभा अवश्य बढ़ाई। व आपना निष्पक्ष निर्णय दिया। बठिंडा में जिन कल्बों में इन्होने संगीत दिया उनमें से कुछ के नाम तो यहाँ दिये जा रहे है कुछ ऐसी कल्बे है जो कुछ समय के लिये ही ऊभरी और समय की आंधी के कारण विखर गई। उनके नाम तो मेरी स्मृती पटल से निकल गये है। परन्तु जो आंकित है वो निम्न हैं।

श्री राम नाटक कल्ब, सुभाष नाटक समाज विद्या मन्दिर, ऐवरेस्ट थियेटर, सरस्वती आर्ट थ्येटर, टैगोर कला केन्द्र, श्री कृष्णा ड्रामिटिक कलब, विशाल थ्येटर, युनाईटिड़ थ्येटर, भारतीय कला केन्द्र आदि के नाम मुख्य हैं। इन कलबों में अनेकों वार संगीत दे कर नाटकों की शान को दो वाला किया हैं।

समय का पालण :- यह समय के आत्यधिक पावद थे। आप यह सुनकर दातों तले उगली दवा लेगे कि यह घर पर कभी घड़ी भी नहीं रखते थे। और न ही कभी आपने इनके हाथ पर घड़ी वंधी देखी होगी। फिर भी एक मिन्ट तो दूर एक सैकन्ड़ भी देर से नहीं पहुंचते थे। सत्य तो यह है कि इन का मस्तिषक ही अनमोल घड़ी था

कर्मठ :- यह बड़े कर्मठ व्यक्ति थे। इनके काम में कोई मीन मेख नहीं निकाल सकता था। इनका हर काम नपा, तुला व उचित होता था। समाचार पत्र पढ़ने में यह बहुत रूची रखते थे। प्रात: काल तथा सांयकाल पुस्तकालय में जा कर अग्रेजी, उरदु, हिन्दी सभी पत्रों को पढ़ जाते थे। विश्व का कोई ऐसा समाचार न होता था। जिस से यह परिचित न होते। सफाई इनका विशेष गुण था।

सफेद रंग के कपड़े, सफेद रंग की चप्पल और सर्दी में सफेद रंग की गर्म शाल साथ रखते थे। लाखों के स्वामी होने के कारण नौकरी की आवश्कता न होते हुए भी इन्होने समय व्यतीत करने के लिये बठिंडा सट्टा मार्कीट में 25-30 वर्ष कंशीयर की नौकरी की। इनका दामन हमेशा साफ रहा।

मित व्ययी :- धनी होते हुये भी वे मित व्ययी थे। अपने जीवन में कभी इन्होने अपव्यय नहीं किया। अवश्कता पर व्यय करते कभी घबराते नहीं थे।

दृढ प्रतिज्ञ :- यह इनका सबसे महान गुण था। जिस किसी को भी इन्होने जो वचन दे दिया उस पर ध्रुव तारे की तरह अटल रहते थे।

प्रतीभा :- ईशवर की तरफ इनको अदभुत प्रतीमा प्राप्त थी। हर बात की गहराई तक तुरन्त पहुंच कर उसका सपष्टी कारण तथा समाधान बड़े अच्छे शब्दों में करते ते। इनकी प्रतीमा का चमत्कार बालीवाल तथा नाटकों में देखकर सभी विपक्षी भी इनकी सराहणा करते थे। इनकी प्रतीभा का गौरव इस बात से सिद्ध होता है कि इन्होने कभी संगीत नहीं सीखा, बाजा तक नहीं खरीदा फिर भी संगीत सम्राट के विशेषण से सुशोभित हुए। राग रागनियों के ज्ञाता हुए।

परामर्शदाता :- यह अच्छे परामर्शदाता थे। जब किसी व्यक्ती पर कभी कोई विपता आई तो इन्होने तुरन्त उसे आपना परामर्श देकर विपता से निकाला।

अच्छे सहायक :- दीन दुःखी कलाकारों के लिए यह अच्छे सहायक सिद्ध होते थे। कभी २ उनको आर्थिक सहाहता देकर उनकोप्र ·

संकट से निकाल देते थे। यद्दपि यह अधिक शिक्षक नहीं थे। परन्तु ज्ञान के अथाह भण्डार थे। कोई भी इनसे किसी देश जाती, धर्म प्रान्त, राजनैतिक पार्टी या बस ट्रेन आदि के बारे में पूछता तो यह तुरन्त बता देते थे। दुनिया का मानचित्र इनके मस्तक में अंकित था।

महान अभिनेता :- आपने जीवन में इन्होने 250 नाटकों में भाग लिया। अत: कुशल अभिनेता सिद्ध हुए। अभिनेता तथा संगीत निरदेशक के साथ-२ यह परदे के पीछे निरदेशक भी होते थे। यह अदभुत समरण शक्ति के मालिक थे। आपने स्थान पर बैठे २ यह कलाकारों को उनके सवाँद बताते रहते थे। बठिंडा में रामलीलायें तो आज भी हो रही है और भविष्य में भी होती ही रहेंगी परन्तु उनमें वो रस नहीं बरसेगा जो उनके होते हुए होता था।

यह ठीक है कि आज का युग विज्ञापन बाजी का युग है और यह विज्ञापन पाक्षी से सदा दूर रहे। कभी आपने विषय में किसी को कहने के लिये उत्साहित नहीं किया। कभी आपने मुख से प्रशंसा के दो बोल नहीं बोले बल्कि मूकश्रोता की भांति मूक बने रहे।

लेकिन दुःख इस बात है कि जिसने दूसरों को सहारा दे कर उठाया आप कषट सह कर भी दूसरों के कषट को दूर किया, जो बठिंडा नगर की सीमा से दूर २ तक प्रसिद्ध था। जिस की यशपताका आज भी दूर २ तक झुल रही है। जो नगर की महान विभुती था। जिसको बच्चा २ जानता था। जिसके चरणों के में बैठ कर अनेक कलाकारों ने कला का मर्म जाना अभिनय का सुन्दर पाठ पढा, जिस ने साधारण व्यक्तियों को

गीतकार तथा लेखक बना दिया। जिसने आपनी कला का सिक्का शिमला की प्रतियोगता में भी बिठा दिया। बठिंडा की जनता द्वारा उसका भुलाया जाना एक लज्जा जन्क बात है। बठिंडा के कलाकारों ने, दानवीरों ने, नगरपालिका ने, उनके लिए कुछ नहीं किया कोई समारक नहीं बनवाया कोई यादगार खड़ी नहीं की। "परोकारय सतां विभुतय" कह कर मैं भी सतोष कर लेता हूं फिर भी चाहे इस दिग्वज महारथी को सब भुल जाये परन्तु बठिंडा रंगमंच का इतिहास इन्हें कभी नहीं भुलेगा और रंगमंच के इस अजर अमर कलाकार को भुले भटके कभी न कभी आपनी यादों के झरोखों से इस की कला सम्बन्धी महान सेवाओं पर दृष्टिपात कर ही लेगा क्योकि बठिंडा में जब तक नाटय कला का विकास रहेगा तब तक यह नाटक कला के अमिर पृष्ट बने रहेगे।

अन्त में मैं उनके बेटे रमेश कुमार व पौत्र सुरेन्द्र कुमार का कृतक्ष दूं। जिन्होने आपने कुलभुषण के लिये, आपने वंश के उस हीरे के लिये यह उदारता से भरा कदम उठाया है और मुझे उनके विषय में कुछ लिखने के लिये कहा है। मैं उस गुण सागर, संगीत सम्राट, कला मर्मज्ञ, योग्य खिलाड़ी, महान कलाकार के प्रति यादि कुछ श्रद्धा सूमन की श्रद्धाज्जली अर्पित कर सका हूँ तो उसका श्रेय भी मास्टर जी को ही जाता है। जिन की प्रेरणा से मैं कुछ लिखने के योग्य हुआ हूं। मैं तो इनका रिणि हूँ। इस जन्म में तो शायद इसका रिणि उतार भी न सकू। हां इतना आवश्य है कि कुछ शब्दों के ये पुष्प समर्पित करके कुछ हलका अवश्य हो गया है।

लेखक :-

इतिशुभम

प्रस्तुत कर्ता :-

रमेश कुमार गर्ग, सुरिन्द्र कुमार गर्ग
लक्ष्मी कान्त गर्ग

पुराना सट्टा बाजार
गली मास्टर ज्योती स्वरूप
मकान न० 4507, बठिंडा ।

माया प्रिंटिंग प्रेस किकर बाजार, बठिंडा फोन : 3402